बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 02 ● नई दिल्ली ● सोमवार 06 अक्तूबर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

पूर्वी दिल्ली में दो साल के मासूम की अगवा कर हत्या, पुलिस का दावा- रंजिश में की गई वारदात

नई दिल्ली । उत्तर-पूर्वी दिल्ली के खजूरी खास इलाके में शुक्रवार शाम दो साल के मासूम राठौर की अगवा कर हत्या कर दी गई। शनिवार सुबह मासूम का शव सीआरपीएफ कैंप की चारदीवारी वॉल के पास खून से लथपथ पड़ा मिला। इसके सिर पर चोट के निशान मिले हैं। आशंका व्यक्त की जा रही है कि किसी भारी वस्तु से सिर पर वार कर हत्या की गई। खजूरी खास थाना पुलिस ने अपहरण और हत्या का मामला दर्ज कर जांचबीन शुरू कर दी है। खुद अतिरिक्त जिला पुलिस उपायुक्त संदीप लांबा मामले की जांच में जुटे हैं। सीसीटीवी से अहम सुराग मिले हैं। कुछ संदिग्धों की पहचान कर ली गई है। पुलिस के मुताबिक मासूम राठौर अपने परिवार के साथ खजूरी खास फ्लाईओवर के नीचे रहता था। इनके रिश्तेदार भी आसपास ही रहते हैं।

मोदी सरकार धन के केंद्रीकरण को बढ़ावा दे रही है, यह लोकतंत्र की आत्मा पर सीधा हमला है: कांग्रेस

नई दिल्ली ।

कांग्रेस ने रविवार को सरकार पर आरोप लगाया कि केंद्र अमीरी और गरीबी की खाई को बढ़ा रहा है। पार्टी ने कहा कि यह सिर्फ अर्थव्यवस्था के लिए समस्या नहीं है, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा पर सीधा हमला है। कांग्रेस महासचिव व संचार प्रभारी जयराम रमेश ने एक्स पर एक मीडिया रिपोर्ट साझा की। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारत अब अरबपतियों का नया केंद्र बनता जा रहा है और देश में अमीर लोगों की संख्या साल दर साल तेजी से बढ़ रही है। रमेश ने एक्स पर हिंदी में लिखे एक पोस्ट में कहा, एक के बाद एक रिपोर्ट भारत में धन के एक खास वर्ग के बारे में सीमित होने की चेतावनी दी जा रही है। जहां लाखों भारतीय अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं सिर्फ 1,687 लोगों के पास देश की आधी संपत्ति है। उन्होंने कहा, मोदी सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण देश का पैसा कुछ खास लोगों के बीच केंद्रित हो गया है। इसके कारण हमारे देश में भारी आर्थिक असमानता पैदा हुई है। यह असमानता व्यापक सामाजिक असुरक्षा और असंतोष को जन्म दे रही है। उन्होंने कहा कि अन्य देशों में हाल की घटनाओं से पता चला है कि यही चरम आर्थिक असमानता और अपंग लोकतांत्रिक संस्थाएं राजनीतिक अराजकता की उत्प्रेरक बनी हैं। रमेश ने कहा कि यह सरकार भारत को उसी रास्ते पर धकेल रही

है। उन्होंने आरोप लगाया, सत्ता के गठजोड़ के कारण कुछ उद्योगपति और अधिक अमीर होते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री की नीतियां पूरी तरह से उनके कुछ उद्योगपति मित्रों के लाभ पर केंद्रित हैं। रमेश ने दावा किया है कि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ एमएसएमई क्षेत्र अभूतपूर्व दबाव में है। यह दबाव न केवल घरेलू नीतियों का बल्कि विदेश नीति के मोर्चे पर सरकार की विफलताओं का भी परिणाम है। रमेश ने कहा, आम लोगों के लिए कमाई के अवसर कम होते जा रहे हैं। मुद्रास्फीति इतनी बढ़ गई है कि नौकरीपेशा लोग भी बचत के बजाय कर्ज के बोझ तले दब रहे हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश लगातार घट रहा है और सामाजिक सुरक्षा योजनाएं कमजोर होती जा रही हैं। उन्होंने कहा कि मनरेगा जैसी सफल योजनाएं, जिसने लाखों लोगों को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान की, अब मजदूरी संकट से जूझ रही हैं। उन्होंने कहा कि श्रमिकों को समय पर भुगतान भी नहीं मिल पा रहा। रमेश ने कहा, देश में आर्थिक खाई का चौड़ा होगा न केवल अर्थव्यवस्था के लिए समस्या है, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा पर सीधा हमला है। जब आर्थिक शक्ति मुट्ठी भर लोगों के हाथों में केंद्रित हो जाती है, तो राजनीतिक फैसले भी उनके पक्ष में होने लगते हैं। उन्होंने कहा कि इससे सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ रही है। रमेश ने कहा कि इसका परिणाम यह हो रहा है कि लाखों लोग धीरे-धीरे लोकतंत्र और विकास की प्रक्रिया से बाहर हो रहे हैं। एम3एम हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 में शामिल लोगों की कुल संपत्ति 167 लाख करोड़ रुपये आंकी गई है। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद के लगभग आधे के बराबर है। सूची में 1,000 करोड़ रुपये की संपत्ति वाले 1,687 व्यक्ति शामिल हैं। इसमें 284 लोग बढ़े हैं और 148 पहली बार शामिल हुए हैं। हुरुन ने कहा कि भारत में पिछले दो वर्षों से हर हफ्ते एक अरबपति बना है। इस सूची में शामिल लोग हर दिन 1,991 करोड़ रुपये की संपत्ति जोड़ रहे हैं।

विदेशी कोच पर कुत्तों के हमले पर भड़के विजय गोयल, बीजेपी नेता ने सुप्रीम कोर्ट को भी बताया जिम्मेदार

नई दिल्ली ।

नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप के दौरान 3 अक्टूबर की सुबह बड़ा हादसा हुआ. खेल की प्रैक्टिस के समय जापान और केन्या के दो विदेशी कोचों तथा एक सिक्योरिटी गार्ड पर आवारा कुत्तों ने हमला कर दिया था. अब इस मामले पर दिल्ली बीजेपी नेता विजय गोयल ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि यह भारत के लिए बेहद शर्मनाक है. उन्होंने वीडियो जारी कर बताया कि विदेशी कोचों पर हमला भारत की बदनामी का कारण बनेगा. गोयल ने कहा कि विदेशों में सड़कों पर एक भी कुत्ता नजर नहीं आता, जबकि भारत में लगभग 12 करोड़ आवारा कुत्ते मौजूद हैं.

सुप्रीम कोर्ट भी जिम्मेदार- विजय गोयल

विजय गोयल ने एमसीडी और स्थानीय प्रशासन पर भी सवाल उठाए. उन्होंने कहा कि स्टेडियम से कुत्तों को हटाने की जिम्मेदारी एमसीडी की थी या फिर उन लोगों की जो कुत्तों को वहां खाना खिलाते हैं. उन्होंने सुप्रीम कोर्ट को भी जिम्मेदार ठहराया और कहा कि अदालत के निर्णयों के चलते कुत्तों को सड़कों से हटाने की प्रक्रिया अधूरी रह गई. नतीजतन अब वही कुत्ते लोगों को काट रहे हैं.

भारत में आवारा कुत्तों से सावधान की दी चेतावनी

विजय गोयल ने कहा कि दिल्ली में ही हर साल आवारा कुत्तों के काटने के 2000 से ज्यादा मामले दर्ज होते हैं. इसमें महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग लगातार शिकार बनते हैं. अब विदेशी पर्यटक और खिलाड़ी भी इससे प्रभावित हो रहे हैं. उन्होंने चेतावनी दी कि अगर यह स्थिति जल्द नहीं सुधरी तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को आवारा कुत्तों से सावधान वाला टैग लग सकता है. इसके लिए उन्होंने स्थानीय प्रशासन, डॉग फीडर्स और जिम्मेदार अधिकारियों को सीधे तौर पर दोषी ठहराया.

रूस ने पाकिस्तान को नहीं बेचे जेएफ-17 के इंजन, भाजपा ने कहा- कांग्रेस फैला रही भारत विरोधी जानकारी

नई दिल्ली । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता अमित मालवीय ने रविवार को रूस की तरफ से पाकिस्तान को RD-93MA इंजन सप्लाई करने की खबरों को पूरी तरह से खारिज किया। उन्होंने कहा कि ऐसी किसी भी सप्लाई की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है और ना ही कोई विश्वसनीय स्रोत है। अमित मालवीय ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा- कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एक मीडिया रिपोर्ट पर भरोसा किया, जिसमें एक ऐसे वेबसाइट का हवाला दिया गया जो प्रो-पाकिस्तान प्रोपेगेंडा फैलाने के लिए जाना जाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि जयराम रमेश इस खबर के जरिए जानबूझकर भारत विरोधी जानकारी फैला रहे हैं। अमित मालवीय ने लिखा, कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं, कोई विश्वसनीय स्रोत नहीं। यह सिर्फ एक और बेतुकी जानकारी की लड़ाई है।

कांग्रेस के संचार प्रमुख ने फिर से दुश्मन के साथ खड़े होने का रास्ता चुना है, बजाय इसके कि वे भारत के साथ खड़े हों। इससे एक दिन पहले, जयराम रमेश ने कहा था कि रूस, जो कभी भारत का करीबी सहयोगी माना जाता था, पाकिस्तान को जेएफ-17 थंडर ब्लॉक III लड़ाकू विमानों के लिए RD-93MA इंजन सप्लाई कर रहा है। रमेश ने आरोप लगाया कि भारत की अपीलों के बावजूद यह सौदा आगे बढ़ रहा है। जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा था कि मोदी सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि रूस, जो भारत का लंबे समय तक भरोसेमंद सहयोगी रहा है, पाकिस्तान को सैन्य सहायता क्यों दे रहा है, जबकि भारत रूस से एस-400 मिसाइल सिस्टम और एसयू-57 स्टील्थ लड़ाकू विमानों की खरीदारी कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि जेएफ-17 ब्लॉक III विमान में अपग्रेडेड इंजन और वही पीएल-15 मिसाइलें होंगी, जो ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के खिलाफ इस्तेमाल की गई थीं। यराम रमेश ने यह भी कहा कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने जून 2025 में इस सौदे में हस्तक्षेप किया था, लेकिन इसके बावजूद रूस पाकिस्तान को इंजन सप्लाई कर रहा है।

फेसबुक कॉल से शुरू हुआ ठगने का खेल, दिल्ली पुलिस ने नूंह से आरोपी को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस की साइबर सेल सेक्सटॉर्शन के बढ़ते मामलों पर बड़ी कार्रवाई करते हुए हरियाणा के नूंह जिले से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है. आरोपी की पहचान मोहम्मद नसीर के रूप में हुई है. दिल्ली पुलिस के मुताबिक मामला उस वक्त सामने आया जब एक व्यक्ति को फेसबुक मैसेंजर पर किसी अज्ञात महिला की वीडियो कॉल आई, जो तुरंत डिस्कनेक्ट हो गई. कुछ ही देर बाद उसे एक व्यक्ति ने फोन कर खुद को साइबर पुलिस अधिकारी बताया और धमकी दी कि उसका अश्लील वीडियो यूट्यूब पर अपलोड कर दिया जाएगा. फिर कॉल पर एक अन्य व्यक्ति को जोड़ा गया जिसने खुद को यूट्यूब स्टाफ बताया और वीडियो हटाने के बदले पैसे की मांग की. डर के कारण पीड़ित ने तीन अलग-अलग ट्रांजेक्शन में कुल 39 हजार भेज दिए. बाद में उसे एहसास हुआ कि उसके साथ धोखाधड़ी हुई है. जिसके बाद उसने NCRP पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई. दिल्ली पुलिस ने मामले में शिकायत मिलते ही टीम का गठन किया . दिल्ली पुलिस की टीम ने तकनीकी निगरानी और बैंक अकाउंट की जांच की. पैसों के लेन-देन का पता लगाते हुए पुलिस टीम ने हरियाणा के नूंह जिले में छापा मारा और आरोपी मोहम्मद नसीम को गिरफ्तार कर लिया. दिल्ली पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी और उसके साथियों का गिरोह पहले सोशल मीडिया पर वीडियो कॉल कर डर का माहौल बनाता है, फिर खुद को पुलिस या यूट्यूब अधिकारी बताकर पैसे वसूलता है. ठगी की रकम कई खातों में ट्रांसफर कर एटीएम से निकाल ली जाती है ताकि ट्रेल पकड़ना मुश्किल हो जाए. दिल्ली पुलिस को अब तक देशभर से चार और शिकायतें इस गिरोह से जुड़ी मिली हैं. पुलिस आरोपी से पूछताछ कर नेटवर्क के बाकी सदस्यों की तलाश कर रही है.

मृतक राजेन्द्र कुशवाहा केस में अभी तक नहीं हुई कोई कार्यवाही और पुलिस के द्वारा भी अभी तक नहीं लिया गया कोई ठोस ऐक्शन

धौलपुर जिले, राजस्थान (जगदीश) के परौआ गांव में 17-09-2025 में राजेन्द्र कुशवाहा की हुई मौत में ठेकेदारों के कहने पर आबकारी विभाग ने की रेड में करीब 8 घंटे की लगातार कार्रवाई में बिना परमिशन के रात्रि में घन छेनी हथौड़ी से मकान के गेटों की करी तोड़ फोड़ व कटाई से नहीं भरा मन तो जनेटर लाकर ग्राइंडर वेल्डिंग मशीन से करी कटाई में जनेटर का करंट से हुआ सारा हादसा इसलिए मेरे भाई राजेन्द्र कुशवाहा को साजिश और प्लानिंग करके उतारा मौत के घाट और अपने बचाव के लिए ठेकेदार के साथी लोगों और आबकारी विभाग के अधिकारियों ने बाद में लटकाया फांसी के फंदे पर और मृतक पर लगाया झूठा

मुकदमा। श्रीमानजी आईपीएस विकास सांगवान जी से निवेदन है कि हमारी निष्पक्ष जांच हो और उन दोषियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्रवाई हो। आरोपियों के खिलाफ नाम दर्ज रिपोर्ट होने के बाद भी उनके खिलाफ अभी तक नहीं हुई कोई कार्रवाई और सुनवाई ।अपराधी खुलेआम घूम कर मृतक के परिजनों को दिनों दिन जान से मारने की दे रहे हैं धमकी। इस लिए श्रीमानजी विकास सांगवान जी से विनम्र निवेदन है कि हमारे केस की जांच किसी वरिष्ठ और ईमानदारी अधिकारी के द्वारा करवाई जाए। आरोपियों खिलाफ कार्रवाई कर दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाई जाए। श्रीमानजी आपकी अति और कोटि कोटि कृपा होगी।

संघ और बापू ; बर्थ डे शेयरिंग बेनिफिट

राजेंद्र शर्मा

गुरु गुड़ रहा और चेला शक्कर हो भी गया तो क्या? आखिर, मोदी जी के संगठन रूपी गुरु का मामला था। चेला बादल देखकर बेनिफिट ले सकता था, तो गुरु भी एक ही दिन बर्थ डे पड़ने के रिश्ते का बेनिफिट तो ले ही सकता था। इस बार गांधी जयंती पर आरएसएस का भी बर्थ डे पड़ने की देर थी कि संघ पुरुष राजघाट पहुंच गए, बापू को हैप्पी बर्थ डे करने और जवाब में अपना भी हैप्पी बर्थ डे कराने। वैसे हैप्पी बर्थ डे करने गये तो देश के प्रधानमंत्री भी थे और वह खुद कई बार याद दिला चुके हैं कि वह भी संघ पुरुष हैं, पर वह किस्सा और कभी। अचानक हैप्पी बर्थ डे का शोर सुना तो बापू कुछ हड़बड़ा से गए। क्या शोर है, कुछ समझ में आया तो इधर-उधर देखने लगे, किस का बर्थ डे? पर संघ पुरुष ने झट कंफ्यूजन दूर कर दिया। बापू जी इधर-उधर क्या देख रहे हैं--आप को ही हैप्पी बर्थ डे। बापू और सकुचा गए--सभी जानते हैं कि मैंने तो जन्म दिन वगैरह कभी नहीं मनाया। संघ पुरुष को आशंका हुई, कहीं बापू उठकर न चले जाएं। झट से बोला--वैसे जन्म दिन मनाते तो हम भी कहां हैं? बस नागपुर में सरसंघचालक जी का उद्बोधन...। अब बापू को पूछना ही पड़ा--आज आपका भी जन्म दिन है? संघ पुरुष ने चहक के कहा--सौवां जन्म दिन। पहचाना नहीं--संघ? बापू बोले--हां! कुछ-कुछ पहचाना सा तो मुझे भी लग रहा था। आपने याद दिला दिया, तो अब काफी कुछ याद आ गया। संघ पुरुष को उम्मीद थी कि शायद अब बापू उसे जवाबी हैप्पी बर्थ डे कहें। पर बापू ठहरे 'चतुर बनिया', उस तरफ ध्यान ही नहीं जाने दिया। लगे पूछने अमृतकाल में क्या चल रहा है। पर संघ पुरुष ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। वह भी पीछा कहां छोड़ने वाला था। कहने लगा--आपको याद नहीं, आप एक बार तो हमारे शिविर में भी आए थे, वाह में। आपको हमारे स्वयंसेवकों के अनुशासन, समरसता और कर्तव्यनिष्ठा ने काफी प्रभावित किया था। आपने कृपापूर्वक उस सब की प्रशंसा भी की थी। आपकी प्रशंसा ने अपना कार्य जारी रखने के लिए हमारा बहुत उत्साहवर्धन किया। वैसे वह बात बहुत पुरानी हो गयी। आपको अब तक क्या याद होगी? पर अब हम संघ वाले जब जब भी आपका बर्थ डे मनाते हैं या आपका स्मरण करते हैं, संघ के शिविर को देखकर आप कितने प्रभावित हुए थे, उसका वर्णन जरूर करते हैं। हमारे बर्थ डे समारोह में पीएम जी ने...। बापू धीरे से बोले--हां! मुझे भी खूब याद है। मैं तो इतना प्रभावित हुआ था, इतना प्रभावित हुआ था कि मैंने तो सोचा था कि मैं भी संघ में शामिल हो जाऊं। आजादी-वाजादी के चक्कर में पड़कर, नाहक अपना जीवन व्यर्थ क्यों करना? कांग्रेस-वांग्रेस सब बेकार थीं। आप लोगों को तो पक्के से याद होगा कि मैंने तो बाद में आजादी मिलने के बाद बाकायदा लिखकर कहा भी था कि कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए। पर जवाहरलाल नहीं माने। सरदार भी उनके साथ हो गए। मेरी इच्छा अधूरी ही रह गयी। अब सोचता हूं कि संघ के शिविर को देखने के बाद ही संघ में शामिल हो गया होता, तो जीवन यूं निरर्थक नहीं जाता। ऐसे पछताना नहीं पड़ता। क्या लगता है, अब भी मेरे लिए कोई चांस है? क्या मैं अब भी संघ में शामिल हो सकता हूं? यह तो गुगली थी! संघ पुरुष थोड़ी देर को तो बिल्कुल कंफ्यूज ही हो गए। बुढ़ऊ जरूर मजाक कर रहे थे? मरणोपरांत हृदय परिवर्तन का मजाक? माना कि गांधी हृदय परिवर्तन पर काफी विश्वास करते थे। लेकिन, सत्याग्रह से, बलिदान से दूसरों का हृदय परिवर्तन करने पर ही। खुद गांधी का हृदय परिवर्तन कब, कौन करा पाया था? और तो और, संघ के शिविर के दौरे के बाद, संघ के प्रति जो उनका हृदय परिवर्तन हुआ, वह भी संघ पुरुष को याद आ गया। संघ, हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग, सब में कांग्रेस वालों के शामिल होने पर पाबंदी ही लगवा दी। और सन 1942 में...! संघ पुरुष को याद कर के झुरझुरी सी आ गयी। इन्हीं के चक्कर में तो गोडसे जी को शहादत देनी पड़ी थी। और बुढ़ऊ अब मजाक कर रहे हैं--तब संघ में शामिल हो जाता! संघ पुरुष ने हाथ जोड़ दिए। जाने के लिए नहीं, शिकायत करने के लिए। हमारा सौवां बर्थ डे हुआ तो क्या हुआ, आप फिर भी हमारे बुजुर्ग हैं। आदरणीय हैं। आज ही हमने कहा है, आप हमारे आदर्श हैं। हमें आपका अनुकरण करना है। हमने तो सोचा कि सौवें बर्थ डे पर आप से आशीर्वाद ले लेते हैं।

बुजुर्गों से आशीर्वाद लेना, यह हमारा संस्कार है। फिर अब तो हमारा बर्थ डे नाता भी निकल आया। पर आप तो लगे मजाक करने। बापू ने हठात पूछ दिया--क्या संघ में अब भी हंसी-मजाक एलाउड नहीं है। और फिर जवाब की प्रतीक्षा किए बिना, बापू खुद ही हंस दिए। पर बुढ़ऊ ने बात को फिर घुमा दिया। कहने लगे कि वैसे संघ में शामिल होने वाली बात मैंने मजाक में नहीं कही थी? क्या अब भी गुंजाइश है? संघ पुरुष के मुंह से हैरानी में अचानक निकल गया--मगर क्यों ? अब बापू समझाने की अपनी शाश्वत मुद्रा में आ गए। बोले--यहां लंबा-चौड़ा प्लाट घेर कर बैठे-बैठे बोर हो गया हूं। सोचता हूं कि पब्लिक के लिए ही कुछ करता चलूं। अमृतकाल है तो क्या हुआ, भारत विकसित देश बनने के रास्ते पर फर्राटे भर रहा है तो क्या हुआ, सुना है कि आपके भागवत जी ने भी माना है कि पब्लिक के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। पर राजनीतिक पार्टी बनाऊं तो शाह जी ईडी, सीबीआई, आईटी, दंड संहिता, एफआईआर, सब पीछे लगा देंगे। बचने के लिए उनके गठजोड़, उनकी पार्टी में ही चला जाऊं, पर उससे भी क्या ? वहां भी तो सिर्फ मोदी, मोदी ही करने पर संतोष करना पड़ेगा। और रहे कुर्सी के फायदे, उनका मोह मुझे कभी नहीं था। इससे अच्छा तो सीधे संघ में ही चला जाऊं।

कम से कम ईडी, सीबीआई वगैरह से बचा भी रहूंगा और पब्लिक के भले का कुछ न कुछ काम तो कर ही सकूंगा। संघ पुरुष की आंखों में आंसू आ गए। बापू डर गए। कहने लगे--मैं तो मजाक कर रहा था। सॉरी, बर्थ डे पर हंसाने की जगह तुम्हें रुला दिया। संघ पुरुष ने रोते-रोते कहा--आपके आने, नहीं आने वाली बात नहीं है। बात यह है कि हम भी मोदी, मोदी करने के अलावा और कुछ कहां कर पा रहे हैं। हां! मस्जिदों के सामने हिंदू नौजवानों को नचाने को, अब्दुल की चूड़ी टाइट करने को, देश को भीतर तक दुश्मनों और दुश्मनों के दुश्मनों में बांटने को और शानदार मंदिर और उनसे भी शानदार अपने दफ्तर-महल बनवाने को ही कुछ करना मान लिया जाए तो बात दूसरी है। बापू बोले--बर्थ डे गिफ्ट वाला सिक्का और डाक टिकट क्यों भूल गए? जवाब आया--उसमें भी तो खोट है--देने वाले की नीयत का खोट। सिक्के में हमारे नाम में ही गलती है और टिकट झूठा है। ऐसी चीजों से दिल कैसे बहलाएं? बापू ने कंधे पर हाथ रखकर कहा--मैं तो एक ही तसल्ली दे सकता हूं। जब मन ज्यादा अशांत हो मेरे पास चले आना। यहां बड़ी शांति है। और आने के लिए कोई शर्त भी नहीं है--सत्य और अहिंसा बरतने की भी नहीं। यहां आकर हिंदू-मुस्लिम मत करना बस। जवाब आया--हिंदू-मुस्लिम हम करते कहां ही हैं। यह तो बस हिंदू-विरोधियों का दुष्प्रचार है ! अब गांधी यह कहते हुए उठ गए--मेरे आराम करने का समय हो गया। मिलते हैं अगले बर्थ डे पर। संघ पुरुष राजघाट से उलझन में लौटे--आखिर गांधी ने किस के बर्थडे पर मिलने की बात कही होगी; अपने या संघ के !

सम्पादकीय...

अंबेडकर केवल जातिगत समानता ही नहीं, बल्कि लैंगिक समानता के भी प्रबल समर्थक थे

डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज और इतिहास के ऐसे महापुरुष रहे हैं, जिनके बिना आधुनिक भारत की कल्पना अधूरी है। उन्होंने जिस साहस, संघर्ष और दृष्टि के साथ जीवन जिया, वह उन्हें केवल संविधान निर्माता ही नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति के सच्चे पुरोधा के रूप में स्थापित करता है। डायमंड बुक्स द्वारा प्रकाशित पुस्तक भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर-जीवन-मर्म जिसके लेखक डॉ.राजेन्द्र मोहन भटनागर है। डॉ.राजेन्द्र मोहन भटनागर द्वारा लिखित भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर - जीवन-मर्म इसी महानायक के जीवन, विचारों और योगदान पर गहन प्रकाश डालती है। यह कृति केवल एक जीवनी नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकार की व्यापक अवधारणाओं की प्रस्तुति है। लेखक स्वयं हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर है और उनकी लेखनी का विस्तार उपन्यास, नाटक और कहानियों तक फैला है। इस पुस्तक में उन्होंने सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है, जिससे यह सभी वर्गों के पाठकों के लिए सुलभ हो जाती है। भटनागर यह मानते है कि हिंदी में अंबेडकर पर गंभीर और गहन अध्ययन की कमी रही है, इसलिए यह पुस्तक उस कमी को दूर करने का प्रयास है। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि अंबेडकर का जीवन केवल दलित समाज के लिए प्रेरणा नहीं है, बल्कि समूचे भारतीय समाज के उत्थान का मार्गदर्शन है। पुस्तक 30 अध्यायों में विभाजित है और प्रत्येक अध्याय अंबेडकर के जीवन की एक नई परत खोलता है। उनके बचपन से लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की कठिन यात्रा, सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष, गोलमेज सम्मेलन में भागीदारी, गांधीजी के साथ मतभेद, भारतीय संविधान का निर्माण, बौद्ध धर्म की ओर झुकाव और अंततः धर्मांतरण-इन सभी पहलुओं को क्रमवार प्रस्तुत किया गया है। शुरुआती अध्यायों में अंबेडकर की बाल्यावस्था और जातिगत भेदभाव के अनुभवों का चित्रण है। यह स्पष्ट होता है कि कैसे अपमान और विषमताओं ने उनके भीतर विद्रोह की चिंगारी पैदा की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने का उनका संघर्ष प्रेरणादायक है, जिसमें उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से ज्ञान अर्जित किया और भारत लौटकर समाज सुधार की ठोस पहल की। लेखक ने अंबेडकर के सामाजिक संघर्षों पर विशेष बल दिया है। अंबेडकर का मानना था कि जब तक समाज से जाति और अस्पृश्यता की दीवारें नहीं टूटेंगी, तब तक सच्ची स्वतंत्रता संभव नहीं है। उन्होंने दलितों के अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्ष किया और उन्हें आत्मसम्मान का मार्ग दिखाया। पुस्तक का अध्याय अब न होगा कोई अछूत विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें बताया गया है कि किस तरह अंबेडकर ने समाज को यह संदेश दिया कि छुआछूत का युग समाप्त होना चाहिए और हर व्यक्ति को समान सम्मान मिलना चाहिए। संविधान निर्माण में अंबेडकर की भूमिका पर भी पुस्तक में विस्तार से चर्चा की गई है। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र की नींव समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर रखी। भटनागर स्पष्ट करते है कि यदि अंबेडकर की दूरदृष्टि न होती तो शायद आज भारत एक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में स्थापित न हो पाता। अंबेडकर ने स्त्रियों को अधिकार दिलाने के लिए हिंदू कोड बिल का भी मसौदा तैयार किया, यद्यपि उस समय राजनीतिक विरोध के कारण उसे तत्काल लागू नहीं किया जा सका। यह तथ्य इस पुस्तक में विस्तार से दर्ज है कि अंबेडकर केवल जातिगत समानता ही नहीं, बल्कि लैंगिक समानता के भी प्रबल समर्थक थे। गांधीजी और अंबेडकर के संबंधों पर लेखक ने संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। दोनों का लक्ष्य समान था समाज से अन्याय और भेदभाव को समाप्त करना। किंतु उनके मार्ग भिन्न थे। गांधीजी नैतिक और धार्मिक आधार पर छुआछूत के विरुद्ध थे, जबकि अंबेडकर ने राजनीतिक और कानूनी अधिकारों को प्राथमिकता दी। यह मतभेद स्वतंत्रता आंदोलन की राजनीति में एक अहम मोड़ बन गया। पुस्तक में इस संघर्ष को गहराई से प्रस्तुत किया गया है और यह भी दिखाया गया है कि कैसे अंततः दोनों की दृष्टियाँ एक-दूसरे की पूरक सिद्ध हुईं। अंबेडकर का बौद्ध धर्म की ओर रुझान और अंततः धर्मांतरण उनकी जीवन यात्रा का निर्णायक मोड़ था। भटनागर बताते हैं कि अंबेडकर ने बौद्ध धर्म को इसलिए अपनाया क्योंकि वह समानता, करुणा और मानवतावाद की आधारशिला पर टिका हुआ था। यह केवल उनका व्यक्तिगत निर्णय नहीं था, बल्कि सामाजिक क्रांति का आह्वान था। लाखों अनुयायियों ने उनके साथ धर्म परिवर्तन किया और यह भारत में एक नए युग की शुरुआत थी। पुस्तक में इस प्रसंग का वर्णन अत्यंत संवेदनशीलता और विस्तार से किया गया है। इस पुस्तक की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अंबेडकर को केवल एक राजनीतिक या सामाजिक नेता के रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि उन्हें एक महान मानव के रूप में दर्शाती है। भटनागर लिखते है कि अंबेडकर न शासक, बल्कि एक सच्चे इंसान थे-संवेदनशील, संघर्षशील, विद्वान और निडर। उनकी यही मानवीयता उन्हें महान बनाती है। पुस्तक के अंत में लेखक अंबेडकर की प्रासंगिकता पर बल देते हैं। वे मानते हैं कि अंबेडकर केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि आज भी उतने ही आवश्यक है। जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और अन्याय आज भी भारतीय समाज की चुनौतियाँ हैं। ऐसे में अंबेडकर की सोच और उनके आदर्श हमारे लिए दिशा-दर्शक है। यह पुस्तक पाठकों को न केवल अंबेडकर के जीवन से परिचित कराती है, बल्कि उन्हें यह भी प्रेरित करती है कि वे समानता और न्याय आधारित समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ। हालाँकि, पुस्तक में कुछ सीमाएँ भी हैं। अंबेडकर के आर्थिक चिंतन और वैश्विक दृष्टिकोण का उल्लेख अपेक्षाकृत कम है। जो पाठक गहन अकादमिक विश्लेषण की तलाश में है, उन्हें अन्य शोधग्रंथों का सहारा लेना पड़ सकता है।

मानव जीवन से कम कीमती नहीं पशुओं का जीवन

पशुओं के कल्याण मानकों में सुधार को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 4 अक्तूबर को 'विश्व पशु कल्याण दिवस' मनाया जाता है। विश्व पशु दिवस पहली बार बर्लिन में 24 मार्च 1925 को पशु कल्याण के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया गया था। पशुओं की लुप्तप्राय प्रजातियों की दुर्दशा को उजागर करने के लिए इटली के फ्लोरेंस में 1931 में आयोजित पारिस्थितिकविदों के एक सम्मेलन में विश्व पशु दिवस की शुरुआत की गई और तब असीसी के सेंट फ्रांसिस के पर्व के कारण यह दिवस मनाने के लिए प्रतिवर्ष 4 अक्तूबर को ही चुना गया। 2003 में पहली विश्व पशु दिवस वेबसाइट यूके स्थित पशु कल्याण चैरिटी 'नेचर वॉच फाउंडेशन' द्वारा लॉन्च की गई थी। इस दिन पशु अधिकारों को बढ़ावा देने वाले व्यक्तियों एवं संगठनों का समर्थन करके जानवरों के प्रति प्यार, देखभाल, स्नेह और सुरक्षा को प्रोत्साहित करता है। पशुओं के अधिकारों के लिए यह एक ऐसी वैश्विक पहल है, जिसका प्रमुख उद्देश्य पशु कल्याण के लिए बेहतर मानक सुनिश्चित करना है। पशु प्रेम के बारे में महात्मा गांधी कहते थे कि किसी राष्ट्र की महानता और उसकी नैतिक प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां जानवरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। पशु मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो न केवल हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं बल्कि हमें बेहतर इंसान भी बनाते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में सभी जानवर प्रकृति की पारिस्थितिकी को संतुलित रखते हुए, हमारे पर्यावरण की रक्षा करने और मानव स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में भी समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मनुष्य और पशु न केवल एक-दूसरे पर निर्भर हैं बल्कि एक-दूसरे के पूरक भी हैं। सही मायनों में दोनों का अस्तित्व ही खुशहाली का प्रतीक है और यदि जंगल से किसी एक जीव की प्रजाति भी लुप्त होती है तो उसका असर सम्पूर्ण पर्यावरण पर पड़ता है। विश्व पशु दिवस विश्वभर में कल्याण मानकों के मिशन के साथ जानवरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक ऐसा सामाजिक आन्दोलन है, जो प्रतिवर्ष एक निर्धारित थीम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष 'विश्व पशु कल्याण दिवस' की थीम है 'जानवरों को बचाओ, ग्रह को बचाओ!'। भारत में करीब 70 फीसद आबादी कृषि तथा कृषि संबंधी व्यवसायों पर निर्भर है। प्राचीन काल से ही पशुपालन और कृषि व्यवसायों का आपस में गहरा संबंध रहा है। गरीबी से त्रस्त परिवारों के लिए तो पशुधन ग्रामीण मुद्राएं हैं, जो खासकर गरीब परिवारों के लिए बीमा विकल्प के रूप में भी कार्य करता है क्योंकि वह उनके लिए ऐसी सम्पत्ति है, जिसे संकट के समय बेचा जा सकता है। यही कारण है पालतू पशुओं को 'पशुधन' कहा जाता है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में भी पशुधन की बड़ी भागीदारी रही है। मानव और पशुओं के आपसी संबंध मानव जीवन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि पशुओं का मानवीय समाज में विभिन्न रूपों में योगदान होता है।

पशुओं के साथ रहने से हमें स्वाभाविक संवेदनशीलता, प्यार, सहयोग और उन्नति का अनुभव होता है। बहुत से पशु-पक्षी तो ऐसे हैं, जो यदि धरती पर नहीं हों तो पृथ्वी पर मनुष्य का जीना ही मुश्किल हो जाएगा।अनेक मामलों में देखा जाता है कि मानवीय स्वार्थ के लिए कई जानवरों की निर्मम हत्या कर दी जाती है। दरअसल इन पशुओं के विभिन्न अंग तथा उनके मल-मूत्र इत्यादि दवाइयां बनाने से लेकर खेतीबाड़ी तक में काम आते हैं और इनके कंकाल उर्वरक का काम करते हैं। हाथियों को हाथी दांत और गैंडे को उसके सींगों के लिए बेदर्दी से मौत के घाट उतार दिया जाता है जबकि उनकी प्राकृतिक मौत होने पर ये चीजें वैसे ही मिल जानी होती है। हाथी और गैंडे कीचड़ में रहकर दूसरे जानवरों के पीने के लिए किनारे पर पानी का इंतजाम करते हैं और सूखा नहीं पड़ने देते। हाथी जमीन को उपजाऊ बना सकता है जबकि गैंडा कीचड़ में रहकर मिट्टी की अदला-बदली का काम करता है और प्रतिदिन करीब पचास किलो वनस्पति की खुराक होने से जंगल में कूड़ा-कर्कट नहीं होने देता। उसके शरीर पर फसल के लिए हानिकारक कीड़े जमा हो जाते हैं, जो पक्षियों का भोजन बनते हैं। इस प्रकार गैंडे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखते हैं। वैसे तो सभी पशु-पक्षी मनुष्य के सहायक होते हैं लेकिन उनके व्यवहार को समझे बगैर यदि उनके रहने की जगहों को उजाड़ने के प्रयास किए जाते हैं तो वे हिंसक होकर विनाश कर सकते हैं। तुर्की के विख्यात नाटककार, उपन्यासकार और विचारक मेहमत मुरत इल्डन का कहना था कि दुनिया में वन्यजीवों की रक्षा केवल दयालु दिलों के प्यार से ही की जा सकती है। वाइल्ड हार्ट वाइल्ड लाइफ फाउंडेशन के संस्थापक पॉल ओक्सटन कहते थे कि जब तक आपके भीतर प्रकृति के बीच रह रहे जंगली जीवों के प्रति ढेर सारा प्यार, दया और लगाव नहीं होगा, तब तक आप सच्चा सुख हासिल नहीं कर पाएंगे। मानव जाति को यह समझना होगा कि पशुओं का जीवन किसी भी तरह से हमारे जीवन से कम कीमती नहीं है। 'जैव विविधता के जनक' के नाम से विख्यात आधुनिक काल के डार्विन कहे जाने वाले हार्वर्ड विश्वविद्यालय के पूर्व जीवविज्ञानी और पुलित्जर पुरस्कार विजेता ईओ विल्सन के अनुसार पृथ्वी पर प्रत्येक प्रजाति अत्यधिक देखभाल एवं प्रतिभा के साथ बनाई गई ।

विनाशकारी शांति : हमास-इजराइल युद्ध विराम

शनिवार की सुबह न केवल मुस्लिम देशों के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक राहत भरी खबर आई है। इजराइल-हमास, गाजा युद्ध को खत्म करने की दिशा में आगे बढ़े है। एक तरफ इजराइल ने गाजा में हमले रोकने का आदेश दिया है तो दूसरी तरफ हमास ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की 20 सूत्रीय शांति योजना के कुछ बिन्दुओं पर सहमति जताई है। हमास का कहना है कि वह सभी बंधकों को रिहा करने और गाजा की सत्ता को किसी स्वतंत्र फिलिस्तीनी निकाय को सौंपने के लिए तैयार है। 7 अक्तूबर 2023 को हमास के इजराइली नागरिकों पर हमले और उन्हें बंधक बनाए जाने के बाद इजराइल ने युद्ध शुरू किया था। गाजा का इलाका बुरी तरह से तबाह हो चुका है। दो साल चले युद्ध में 66 हजार से अधिक फिलिस्तीनी मारे गए है। लाखों लोग शरणार्थी बन चुके है। इजराइल ने बंधकों को छुड़ाने और हमास को नेस्तनाबूद करने के संकल्प के साथ युद्ध शुरू किया था। सारी दुनिया जानती है कि इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने गाजा में मानवाधिकारों का खुला उल्लंघन करते हुए फिलिस्तीनियों का नरसंहार किया है। डोनाल्ड ट्रंप ने हमास को गाजा के लिए शांति प्रस्ताव स्वीकार करने या नर्क का सामना करने के लिए रविवार शाम 6 बजे तक का अल्टीमेट दिया था। उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि कोई अंतिम समझौता नहीं होता तो हमास के खिलाफ ऐसा भयानक हादसा होगा जो पहले कभी नहीं देखा गया होगा। ट्रंप के अल्टीमेटम के एक दिन पहले ही हमास ने घुटने टेक दिए। हमास का यह भी कहना है कि ट्रंप के प्रस्ताव के कुछ बिन्दुओं पर असहमति है जिन पर विस्तार से बातचीत करना जरूरी है। बात सिर्फ गाजा की ही नहीं। सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि मध्य पूर्व में लम्बे समय से चाही जा रही शांति किस तरह से स्थापित हो। आने वाले दिनों में यह पता चलेगा कि युद्ध विराम हकीकत बनता है या नहीं। यह सवाल अब भी उन्हीं मुद्दों पर टिका हुआ है जो हमेशा से अहम रहे। सवाल यह भी है कि क्या हमास के नेता और नेतन्याहू यह महसूस करते है कि युद्ध खत्म करना उसे जारी रखने की तुलना में ज्यादा फायदेमंद था। कहीं यह युद्ध विराम शांति की मरीचिका तो नहीं। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि गाजा के लिए डोनाल्ड ट्रंप की शांति योजना को प्रमुख अरब देशों का अनुमोदन हासिल हो चुका है। इजराइल को भी यह सोचना है कि 2 साल में उसने गाजा को धूल में मिला दिया और पूरी आबादी विस्थापित हो चुकी है। फिर भी हमास पूरी तरह से पराजित नहीं हुआ है। हमास को भी यह सोचना होगा कि गाजा की तबाही से उसे क्या हासिल हुआ। अरब और मुस्लिम नेताओं ने ट्रंप की शांति पहल का स्वागत किया है लेकिन एक महत्वपूर्ण आवाज सुनने को नहीं मिली वह है फिलिस्तीन की जनता के किसी प्रतिनिधि की। गाजा में वैकल्पिक प्रशासन का नेतृत्व कौन करेगा। यह आवाज भी सामने नहीं आई। कोई भी स्थायी शांति इजराइल और फिलिस्तीनियों के सच्चे प्रतिनिधियों के बीच समझौते पर निर्भर करती है। भले ही हमास को उससे बाहर रखा जाए।

जिंदगी मझधार में

- सुरेश सिंह बैस शाश्वत

बस पूरी रफ्तार से दौड़ी चली रही थी, बस के अंदर बैठे मेरे विचारों की रफ्तार भी ठीक उसी रफ्तार से तेज दौड़ रही थी। मेरे विचारों में उमड़ घुमड़कर विचारों का रेला चल रहा था। मुझे परिवार की ओर से एक अति महत्वपूर्ण कार्य के लिए अंबिकापुर भेजा जा रहा था। जो बड़ी बहन के वैवाहिक रिश्ते से संबंधित था। उस कार्य का पूरा दारोमदार मेरे वहां जाने के बाद और वहां की पूरी परिस्थितियों को देखने समझने के बाद, मेरी जो भी जानकारी होती फिर उस पर मेरी जो भी राय होती उस पर आगे का निर्णय परिवार द्वारा लिया जाना था?। और यही वह कारण था जिसके लिए मैं कहीं ना कहीं चिंतित और विचारों के रेलों में पड़ गया था। मन में सोच विचार चल रहा था कि मेरे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और इस जिम्मेदारी पर सही और खरा उतर पाऊंगा या नहीं..? फिर दूसरी चिंता की वजह यह भी थी कि मैं इतनी दूर अंबिकापुर पहली बार जा रहा था तो स्वाभाविक है मुझे अंबिकापुर शहर के कोई जानकारी नहीं होने से वहाँ पर खोजने की चिंता और वे सब लोग मुझसे कैसे पेश आएंगे उनका घर भी मुझे आसानी से मिल पाएगा कि नहीं? बस इन्हीं खयालों में दिमाग उलझा हुआ था। यह सन 1988 के 5 जुलाई का दिन था। मैं आज ही सुबह भोर की छह बजे वाली गायत्री बस सर्विस में बैठकर अंबिकापुर के लिए निकला हुआ था। अभी रतनपुर ही पहुंचा था। यह बस उन दिनों रतनपुर कटघोरा मोरगा उदयपुर लखनपुर होते हुए अंबिकापुर पहुंचाती थी। वैसे भी उन दिनों जर्जर, उबड़ खाबड़ सड़क होने से बसें बिलासपुर से अंबिकापुर पहुंचने में काफी समय लेती थी। इसलिए सफर में देर हो जाया करती थी। उन दिनों दो सौ चालीस किमी का सफर पूरा तय करने में आमतौर पर बसों को करीब आठ घंटे लगते थे। हालांकि उन दिनों इस सड़क की दूरी अधिक भी थी। अब यही सड़क हाईवे रोड बन जाने से केवल इसकी दूरी केवल दो सौ बाईस किमी ही रह गई है। करीब साढ़े तीन घंटे में बस कटघोरा बस स्टैंड पर पहुंच गई, फिर वहां से दस मिनट बाद बस छूट कर आगे गंतव्य की ओर बढ़ रही थी । कटघोरा से करीब साठ कि मी आगे पहुंचने पर छत्तीसगढ़ प्रदेश की एक प्रमुख नदी हसदेव नदी के पार जाने के लिए हमारी बस पुल के पास जब पहुंची, तब हम सभी यात्रियों ने देखा कि कुछेक बसों के आलावा अन्य वाहन भी साइड में कतारों में लगे हुए है। हमारी बस के ड्राइवर? ने भी वाहनों की कतारें और किसी अन्य वाहन को आगे न जाते देखकर बस को सड़क के किनारे लगा दिया। हम सभी यात्रीगण कौतूहल से खिड़कियों से झांकने लगे। नीचे सड़क पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। ड्राइवर कंडक्टर के उतरने के बाद बस से हम सब यात्री भी धीरे-धीरे कर नीचे उतर गए। मैं भी सभी यात्रियों के साथ नीचे उतर गया। हम सभी ने देखा कि थोड़े आगे नदी पर पुल के किनारे का बिलकुल थोड़ा सा ही हिस्सा दिख रहा था ,जिससे यह समझ में आ रहा था कि यहीं पुल है, जिसमें से बस को आगे बढ़ना था। हम जहां खड़े थे वह एक पहाड़ नुमा पत्थर के ऊपर था, वहीं उसके सिरे से लगकर नदी पारकर पुल उस पार तक जा रहा था। हम लोगों ने आगे पीछे दोनों नदी के दोनों ओर देखा चारों तरफ घने जंगल दिखाई दे रहे थे। दूर-दूर तक कोई बस्तियां भी नहीं थी। हसदेव नदी का पाट काफी चौड़ा और फैला हुआ था। सभी यात्रियों के साथ मैं पैदल ही धीरे-धीरे नदी किनारे की तरफ जब पहुंचा तो देखता क्या हूं की नदी भयंकर रूप से बढ़ी हुई है। पुल से करीब बीस फीट ऊपर तक पानी तेज लहरों के साथ बह रहा था। बताया गया की नदी खतरे के निशान से काफी ऊपर तक बह रही थी। नदी विकराल रूप से बही जा रही थी। नदी का पानी भी चाय नुमा लाल कत्थई रंग का था। लहरों के साथ बहती हुई दिख रही थी सूखी पेड़ों की लकड़ियाँ में जहरीले सांप बिच्छू लिपटे हुए भी दिखाई दे रहे थे। कोई कोई जानवर भी बहते दिखाई दे रहे थे। कुल मिलाकर नदी का ये विकराल रूप देखकर हम सभी यात्री थोड़ा सहम गए। विकराल रूप से बढ़ी हुई नदी पर पुल भी पूरी तरह से डूब चुका है तो अब हम आगे की यात्रा कैसे कर पाएंगे! इसी पर सब यात्रीगण चर्चा करने लगे। इस पार से हमने नदी उस पार देखा तो उधर भी दो-चार बसें और कुछ अन्य वाहन किनारे पर लगी हुई दिख रही थीं। हम सभी यात्री फिर ड्राइवर और कंडक्टर के पास पहुंच गए ड्राइवर और कंडक्टर ने हम लोगों से कहा कि आप लोग थोड़ी देर रुकिए हम लोग आगे की क्या व्यवस्था हो रही है, उस हिसाब से फिर आगे कैसे जाना है तय करेंगे। यह सुनकर हम सभी यात्री वहीं आसपास पेड़ों के छांव में आसपास जहां भी बैठने की जगह मिली वहीं चट्टानों के ऊपर बैठ गए। इस बीच ऐसा हुआ कि इंतजार करते हुए तीन घंटे बीत गए। सभी यात्री अब तक ऊबता भी गए थे। अभी भी आगे जाने की कोई खबर नहीं थी। तब हम सब ने ड्राइवर के पास जाकर पूछा कि आप क्या कर रहे हैं ? क्या करना है बस आगे जाएगी की नहीं। यह सुनकर ड्राइवर कंडक्टर ने बताया कि प्रशासन ने छोटे-छोटे नाव मंगवा लिए है, जिस पर बैठकर के आप लोग नदी पार करेंगे। फिर उस पार लगे हुए बस से बैठकर आगे अंबिकापुर तक जाने की व्यवस्था हो गई है। यात्रियों ने यह सुना तो अधिकांश यात्रियों ने विकराल रूप से बढ़ी हुई नदी और उछाल मारती लहरों को देखकर डर गए। जो बाल बच्चेदार व महिलाओं के साथ थे, ऐसे यात्री पूरी बस मे आधे से ज्यादा की संख्या में थे। इन लोगों ने नाव में बैठकर नदी पार करने से इनकार कर दिया।इन सभी को नाव में बैठ कर जाने में संभावित दुर्घटना का डर एवं खतरनाक लग रहा था। मैंने भी देखा नाव आकार में बहुत छोटी थी जो मुश्किल से आठ दस फीट लंबी और चार फीट की चौड़ी थी। दो आदमी नाविक थे, एक आदमी पतवार लेकर खेते हुए उस पार ले जाने के लिए बैठा हुआ था। ऐसी ही तीन-चार नावें लगी हुई थी। बस कंडक्टर ने कहा जो यात्रीगण आगे नहीं जाना चाहते हैं वे फिर से बस में बैठ जाएं। आप लोगों को बस वापस जहां चाहेंगे वहां उतार देगी। और जो यात्री आगे जाना चाहते हैं तो उन्हें नदी पार करने के बाद उस पार की लगी हुई हमारी ही कंपनी की बस पर बैठना होगा । फिर बस उन्हें अंबिकापुर तक लेकर जाएगी। जिस बस से बैठकर जब मैं आया था तो बस पूरी तरह से भरी हुई थी, लेकिन नाव में बैठकर उस पार जाने के लिए मुश्किल से मेरे सहित पंद्रह यात्रियों ने हामी भरी थी। बाकी यात्रियों ने डर के कारण आगे नहीं जाने का फैसला ले लिया। हालांकि मुझे भी नाव में बैठने से डर तो महसूस हो रहा था। लेकिन मैं एक अच्छा तैराक भी था और फिर मैं अकेला भी था। मेरे पास सिर्फ एक बैग था। मैंने मन ही मन यह सोच लिया था कि नाव में बैठूंगा अगर नदी पार करते समय नाव पलटी या कोई दुर्घटना घटी तो बैग फेंक के सीधे पानी में कूद कर जैसे भी हो तैर कर किनारे तो लग जाऊंगा। यही हिम्मत करते हुए मैं भी पंद्रह यात्रियों के साथ नाव में बैठकर आगे जाने के लिए तैयार हो गया। फिर हम एक नाव में बैठ गए जिसमें केवल बारह आदमी बैठ पा रहे थे,और नाव पूरी तरह भर गई थी। नाव जब पूरी तरह भरी तो वो पानी में समा कर किनारे से केवल पांच इंच ही पानी के ऊपर दिख रही थी। नाव का बाकी हिस्सा पानी के अंदर था। नाव को ऐसे देखकर डर भी हो रहा था कि नाव थोड़ी सी भी टेढ़ी हुई की नाव में पानी भर जाएगा। फिर भी सभी ने भगवान का नाम लेकर नाव में उस पार जाने को तैयार हो गए। नाव वाले ने फिर धीरे-धीरे कर नाव को खेना शुरू किया। अब नाव तेज बहाव और लहरों के बीच पानी पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। नाव उस पार की ओर जाने लगी। लहरों में बीच-बीच में पेड़ों के झुरमुट बहते हुए आ रहे थे। जिसे नाव वाला पतवार से साइड लगाते जा रहा था। जब जब भी पेड़ों के झुरमुट सीधे नाव के ही करीब आते तो नाव वाला पतवार से उन्हें किनारे हटाने लगता। यही वह समय होता था जब नाव तेजी से डगमगाने लगती, और कभी इस इस साइड से तो कभी उस साइड से नाव पानी में डूबती डूबती सी दिखाई देने लगती थी। और यही वह पल होता जब हम सभी को सांप सूंघ जाता। नाव पार करते-करते लगता था नाव में अब पानी भरा की तब पानी भरा। लहरों के जोर और पेड़ों को झुरमुट के बहते आने के कारण नाव भी दोनों तरफ से डगमगाने लगती, जिससे लगता था कि नाव अब डूबी तब डूबी। बैठे हुए यात्री भी खामोश और सकपकाए हुए थे। इस बीच मैं भी कुछ आशंकित लेकिन दृढ़ संकल्पित होकर खामोश सा बैठा बलखाती तेज लहरों के साथ बार-बार नदी के उस पार देखता जा रहा था कि अब और कितनी दूर बचा रह गया है। मैं भी किसी आकस्मिक दुर्घटना के लिए बिल्कुल तैयार बैठा हुआ था, कि अगर जैसे ही कहीं नाव डूबने को होगी। तभी बैग को फेंककर सीधे नदी में कूद जाऊंगा। और तैरते हुए नदी के पार निकलने का प्रयास करूंगा। तो किसी भी अनहोनी के लिए मैं पूरी तरह सतर्क बैठा हुआ था। दोनों नाविक भी आहिस्ता आहिस्ता नाव को खेते हुए नदी उस पार की ओर ले जा रहे थे। जैसे-जैसे नाव नदी बीच लहरों पर आ रही थी, वैसे-वैसे उछल मारती लहरों का भयंकर रूप से तेज बहने का वेग भी उसी रफ्तार से बढ़ रहा था। हमारी नाव डगमगाती हिचकोले खाती हुई लहरों को काटते बढ़ तो रही थी मगर हमारे दिल के धड़कन बढ़ते जा रही थी। अब ऐसा हुआ कि यह मुसीबत तो सामने ही थी लेकिन एक और नई मुसीबत आ जाने से मन और भयभीत हो गया जैसे ही हम नदी के बीच लहरों पर पहुंचे ही थे की आसमान से मूसलाधार पानी बरसने लगा। और ये बरसता पानी नाव में सवार सभी लोगों के लिए काफी खतरनाक रूप ले सकता था। जिसके कारण नाव के डूबने के खतरे और बढ़ चुके थे।यह देखकर सभी यात्रियों सहित नाव खेवईया भी चिंतित होकर आसमान की ओर देखने लगे।जहाँ आसमान में काले-काले बादल छाए हुए थे ।

और पानी तेजी से बरसना शुरू हो गया। नाव में बैठे हुए सभी लोगों के हाथ पांव फूल चुके थे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने वन्दना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पैंथनकला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया संपादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2019/00882)

संचारी रोगों पर काबू पाने के लिए जनभागीदारी जरूरी : सीडीओ प्रत्यूष पांडेय

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारंभ, विभागों को दिया सख्त निर्देश

देवरिया।

जिले में संक्रामक बीमारियों के बढ़ते प्रकोप पर लगाम लगाने के उद्देश्य से विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरुआत रविवार को मुख्य विकास अधिकारी प्रत्यूष पांडेय ने की। उन्होंने रवींद्र किशोर शाही स्टेडियम के पूर्वी गेट से जागरूकता रथों को हरी झंडी दिखाकर अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि डेंगू, मलेरिया, फाइलेरिया और इंफ्लुएंजा जैसी बीमारियों से बचाव के लिए जनजागरूकता सबसे बड़ा हथियार है। जब तक लोग स्वयं सतर्क नहीं होंगे, तब तक संचारी रोगों का पूरी तरह खात्मा संभव नहीं है। सीडीओ ने अभियान में जुड़े विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाएं और गांव-गांव तक जागरूकता का संदेश पहुँचाएं। उन्होंने कहा कि संचारी रोगों के उन्मूलन में जनसहयोग सबसे अहम है, और यह तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक स्वच्छता, साफ पानी और मच्छरजनित स्थलों से बचाव पर ध्यान देगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि 5 से 31 अक्टूबर तक विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान और 11 से 31 अक्टूबर तक दस्तक अभियान संचालित किया जाएगा। इन अभियानों के तहत आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बुखार, फाइलेरिया, काला जार, कुष्ठ और कुपोषण से प्रभावित व्यक्तियों की पहचान करेंगी तथा उनका डेटा ई-कवच पोर्टल पर अपलोड करेंगी। इसके साथ ही मच्छरों के प्रजनन स्थलों की सूची तैयार की जाएगी और उसका विवरण संबंधित अधिकारियों को सौंपा जाएगा। स्वास्थ्यकर्मी प्रत्येक परिवार का आयुष्मान भारत हेल्थ एकाउंट (आभा) तैयार करेंगे और नागरिकों को इसके लाभों से अवगत कराएंगे। इस दौरान नोडल अधिकारी डॉ. हरेंद्र, डॉ. आर.पी. यादव, डॉ. कार्तिक पांडेय, डॉ. अश्विनी पांडेय, डीएमओ सी.पी. मिश्रा, डीसीपीएम राजेश गुप्ता, सीवीओ डॉ. ए.के. वैश्य, रविजीत बहादुर सिंह, उपेंद्र तिवारी, सफाई निरीक्षक श्रद्धानंद तथा सहयोगी संस्था सीफार के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

भाजपा पूरी ताकत से लड़ेगी शिक्षक स्नातक विधान परिषद चुनाव -डॉ प्रेमचंद मिश्रा

पडरौना कुशीनगर।

बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व जिलाध्यक्ष व शिक्षक एमएलसी चुनाव के क्षेत्रीय संयोजक डॉ प्रेमचंद मिश्र ने कहा कि अगले वर्ष शिक्षक व स्नातक विधान परिषद सदस्य का निर्वाचन होना है। इसके लिए भाजपा ने पूरी तैयारी से चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है।विगत तमाम चुनावों की तरह इस चुनाव में भी हमें ऐतिहासिक सफलता मिले इसके लिए।हमें प्रत्येक कार्यकर्ता को उसकी योग्यता और क्षमता के अनुसार चुनाव में जिम्मेदारी सौंपनी है। इस अभियान को विचार परिवार के लोगों के साथ मिलकर आगे बढ़ना है। शिक्षक व स्नातक निर्वाचन में सबसे महत्वपूर्ण और परिश्रम का कार्य वोट बनाने का है। महाविद्यालय व विद्यालयों के साथ ही घर-घर संपर्क की रणनीति बनाकर मतदाता बनाने का काम करना है। जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने बताया कि शिक्षक एमएलसी चुनाव के लिए पार्टी के निर्देशानुसार सभी जिला, विधानसभा तथा मतदान केंद्र संयोजक की जिम्मेदारी तय कर लिया गया है। पदाधिकारी विद्यालयों में सम्पर्क कर मतदाता बनाने का कार्य तेजी से कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की जनकल्याणकारी नीतियों तथा तपस्वी कार्यकर्ताओं के परिश्रम से विगत लोकसभा व विधानसभा चुनावो की तरह शिक्षक एमएलसी चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी कुशीनगर जिला में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त करेगी। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष विजय कुमार शुक्ल, जिला मंत्री विवेकानंद शुक्ल, बाबू नन्दन सिंह,जिला मीडिया प्रभारी विश्वरंजन कुमार आनन्द, आई टी विभाग जिला संयोजक नमो नारायण मौर्य, शिक्षक एमएलसी चुनाव के जिला सह संयोजक शैलेन्द्र सिंह विधानसभा संयोजक पशुपति जायसवाल, धन्नजय तिवारी,रामक्यास सिंह,राना प्रताप मिश्र, कन्हैया शर्मा आदि उपस्थित थे।

चंदेश्वर शर्मा परवाना की कृति मेला का हुआ विमोचन

कसया, कुशीनगर।

रचनाकार का सम्मान साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करता है -अभय सिंह
लोक समृद्धि के लिए कवि एवं पत्रकार कार्य करें- चंदेश्वर परवाना
अभा पत्रकार सुरक्षा समिति द्वारा विमोचन एवं सम्मान समारोह आयोजित

तहसील क्षेत्र के साखोपार में अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति, जनपद इकाई द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में राहुल सांकृत्यान सम्मान प्राप्त कविवर चंदेश्वर शर्मा परवाना की कृति मेला का विमोचन अतिथियों ने किया। रविवार को आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह को संबोधित करते हुए बीओसीडब्लयू बोर्ड सदस्य उप्र सरकार अभय प्रताप नारायण सिंह ने कहा कि भोजपुरी कवि परवाना ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कुशीनगर का मान देश विदेश में बढ़ाया है।

इस तरह का आयोजन उदीयमान प्रतिभाओं को मंच देता है और उनकी प्रतिभा निखरती है। रचनाकार का सम्मान साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करता है। इसलिए हमें कवियों की रचनाओं को पढ़ना चाहिए। प्रधानाचार्य अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि कवि परवाना ने भोजपुरी भाषा का संग्रह देकर पूरे समाज को गौरवान्वित किया है। किसान नेता गोबर्द्धन प्रसाद गोंड कहा कि रचना काफी कठिन काम है। सृजन का कार्य कर परवाना ने युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित किया है। कवि दिनेश कुमार तिवारी भोजपुरिया ने मेला की समीक्षा करते हुए पुस्तक को गंवई परिवेश की उत्कृष्ट रचना बताया। दिनेश कुमार पाण्डेय डीके ने अपने संबोधन में कवि परवाना की रचनाओं को भोजपुरी लोक साहित्य की धरोहर बताया। कवि परवाना ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लोक समृद्धि के लिए कवि एवं पत्रकार कार्य करें। गद्य लिखें, पद्य लिखें, नाटक लिखें और साहित्य मेला लगवाएं। कवि जनार्दन जी, अश्वनी द्विवेदी, आकाश महेशपुर, राम नरेश शर्मा, विश्व भोजपुरी मंच के जिलाध्यक्ष आरके भट्ट बावरा, डॉ अवधेश नन्द ने अपनी रचनाएं पढ़ी। अतिथियों का स्वागत अभा पत्रकार सुरक्षा समिति के प्रदेश अध्यक्ष अजय प्रताप नारायण सिंह, विनय कुमार उपाध्याय, दिनेश कुमार ओझा, विनोद तिवारी, ग्राम प्रधान शैलेश प्रताप नारायण सिंह, जिलाध्यक्ष हृदया नन्द शर्मा, असफाक अंसारी, विजय राव, आदित्य कुमार दीक्षित, संदीप मिश्रा, एहतेशाम मिंटू लारी, एड कुशल प्रताप सिंह, मस्तराज शर्मा, मुन्ना राय आदि ने श्री परवाना का माल्यार्पण किया और अंगवस्त्र व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। काव्यात्मक संचालन डॉ घनश्याम तिवारी ने किया। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष भारत रक्षा वाहिनी एसपी सिंह, चन्द्र भूषण पाण्डेय, संजय सिंह, आफताब आलम, संतोष जायसवाल, दया शंकर सिंह, फेकू सिंह, ब्रह्मा सिंह, आशुतोष शर्मा सहित साहित्य मर्मज्ञ मौजूद रहे।

काम कराने के बाद दबंग नेता ने नहीं दी मजदूरी

जौनपुर। जनपद के नेवढ़िया थाना क्षेत्र के कोहड़र गांव में एक गरीब मजदूर के साथ दबंगई का मामला सामने आया है। कोहड़र निवासी प्रमोद विश्वकर्मा ने आरोप लगाया कि अपना दल के नेता चन्द्रशेखर यादव मास्टर ने उनसे काम कराने के बाद मजदूरी का भुगतान नहीं किया और उल्टा मारपीट भी किया। पीड़ित के अनुसार लगभग 5 महीने पहले उन्होंने चंद्रशेखर यादव के घर पर रेलिंग का कार्य किया था। पूरे काम का खर्च 75,000 रुपये तय हुआ था जिसमें से अब तक मात्र 27,000 रुपये ही दिये गये। शेष रकम मांगने पर पहले तो गांव के लोगों के सामने हिसाब-किताब किया गया लेकिन अगले दिन जब प्रमोद काम करने पहुंचे तो चन्द्रशेखर ने उन्हें रोक दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने कथित रूप से प्रमोद को थप्पड़ मारा और उनकी वेल्डिंग मशीन भी छीन लिया। पीड़ित के अनुसार जब उन्होंने पैसा और मशीन वापस मांगी तो चंद्रशेखर

ने धमकाते हुए कहा– जाओ, एक रुपया नहीं दूंगा, जो उखाड़ना है, उखाड़ लो। पीड़ित ने यह भी आरोप लगाया कि आरोपी खुद को नेता और पत्रकार बताकर दबंगई करता है। कुछ महीने पहले उसने अपने ही पड़ोसी के साथ भी मारपीट की थी। मामला अब नेवढ़िया थाने पहुंच गया है जहां पीड़ित ने लिखित तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। समाचार लिखे जाने तक पुलिस मामले की जांच में जुटी रही।

44 छात्राओं ने पाया टैबलेट एवं स्मार्टफोन, खिल उठे चेहरे

पराऊगंज, जौनपुर।

जलालपुर विकास खंड अंतर्गत ग्राम पंचायत मझगावां कला स्थित आर.पी.एस. गर्ल्स डिग्री कालेज में रविवार को नोडल अधिकारी सरिता चौरासिया की देख-रेख में कार्यक्रम हुआ जहां सरकार द्वारा युवाओं को तकनीकी शिक्षा में बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध कराए गए टैबलेट एवं स्मार्टफोन का वितरण किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेंद्र मिश्र रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ विजय मौर्य ने बताया कि टैबलेट एवं स्मार्टफोन प्राप्त करके छात्राएं तकनीकी शिक्षा से अवगत होंगी एवं ऑनलाइन क्लासेस करके वह अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करेंगी। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्र में छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति में यह महाविद्यालय अत्यन्त ही सराहनीय कार्य कर रहा है।

इसी क्रम में प्रबंधक अरविन्द चौरसिया ने समस्त आगंतुकों का अभिवादन करते हुये आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम का संचालन अध्यापक लालचंद यादव ने किया। इस अवसर पर विजय यादव, राजेश यादव, सुनील मौर्य, धर्मेंद्र सरोज, अध्यापक महेंद्र यादव, आशीष यादव, प्रमोद कुमार सहित महाविद्यालय के संजीव पटेल, अध्यापिका खुशी मौर्य, प्रीति यादव, सुचिता सहित अन्य शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे।

भूमि पूजन के साथ ही जगदीशपुर रेलवे क्रासिंग पर फ्लाईओवर का निर्माण कार्य शुरू

जफराबाद, जौनपुर।

स्थानीय क्षेत्र के जगदीशपुर रेलवे क्रासिंग पर बहुप्रतीक्षित फ्लाईओवर पुल का निर्माण का निर्माण कार्य रविवार को भूमि पजन के साथ शुरू हो गया। भूमि पूजन प्रदेश सरकार के मंत्री गिरीश चंद्र यादव ने पूजा करके किया।

साथ ही कहा कि इस फ्लाईओवर से वर्षों पुरानी समस्या का समाधान साबित होगा। परियोजना को दो वर्ष में पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कार्यदायी संस्था ने कहा कि यह पुल समय से पहले बनकर तैयार हो जायेगा।

फ्लाईओवर परियोजना की स्वीकृत लागत 10889.13 लाख तथा प्राप्त आवंटन 7895.20 लाख है। अन्य वक्ताओं ने कहा कि इस ओवरब्रिज के निर्माण से नगर सहित आस–पास के क्षेत्रों के लोगों को जाम की समस्या से स्थायी राहत मिलेगी। फ्लाईओवर निर्माण से नगर की ट्रैफिक व्यवस्था सुधरेगी।

प्रदूषण में कमी आएगी और क्षेत्र के आर्थिक व सामाजिक विकास को नया आयाम मिलेगा।

इस अवसर पर पूर्व विधायक सुरेंद्र प्रताप सिंह, पूर्व विधान परिषद सदस्य केदारनाथ सिंह, पूर्व नगर अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव, पीयूष गुप्ता, आशीष गुप्ता, मंत्री जी के जनसम्पर्क अधिकारी इं. कृष्ण कुमार जायसवाल, प्रतिनिधि अजय सिंह, स्थानीय जनप्रतिनिधि, व्यापारीगण सहित भारी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

बिश्नोई गैंग के बुरे दिनः सुरक्षा एजेंसियों का दावा- अलग हुए गोल्डी बराड़ और काला जठेड़ी, लॉरेंस को बड़ा झटका

नई दिल्ली । अपराध की दुनिया में एकछत्र राज करने वाले लॉरेंस बिश्नोई व उसके गैंग के बुरे दिन शुरू हो चुके हैं। सुरक्षा एजेंसियों की मानें तो लॉरेंस गैंग का दाहिना हाथ कहे जाने वाले कनाडा में बैठे गोल्डी बराड़ और काला जठेड़ी भी अलग हो गए हैं। ये लॉरेंस के लिए बहुत बड़ा झटका है। राजस्थान का गैंगस्टर रोहित गोदारा भी लॉरेंस गैंग से अलग हो चुका है। अधिकारियों की मानें तो इस समय लॉरेंस बिश्नोई अमेरिका में बैठे भाई अनमोल के साथ अकेला रह गया है कनाडा सरकार ने हाल ही में लॉरेंस के खिलाफ कड़ा कदम उठाया है। कनाडा सरकार ने बिश्नोई गैंग को एक आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया है। बिश्नोई गैंग पर कनाडा में खास समुदाय को निशाना बनाकर डर और धमकी का माहौल बनाने का आरोप है। इसे देखते हुए कनाडा की पब्लिक सेफ्टी मिनिस्ट्री की तरफ से जारी बयान में कहा गया कि बिश्नोई गैंग एक इंटरनेशनल टेररिस्ट गैंग है जो हिंसा दहशतगर्दी और डराने धमकाने का काम करता है। ऐसे में बिश्नोई गैंग को आतंकी संगठन घोषित करने के बाद कनाडा की सरकार को उसके खिलाफ और कड़ी कार्रवाई करने की छूट मिलेगी। लॉरेंस का खास माने जाने वाला रोहित गोदारा भी उससे अलग हो चुका है। बरेली, यूपी में फिल्म अभिनेत्री दिशा पाटनी के घर पर फायरिंग मामले में लॉरेंस और रोहित गोदारा के बीच दरार खुलकर सामने आ चुकी है। दोनों ने एक दूसरे के खिलाफ एक्स पर खुलकर लिख चुके हैं। अब गोल्डी बराड़ भी लॉरेंस से अलग हो चुका है। काला जठेड़ी व अलग गैंगस्टर भी अलग हो चुके हैं। देश की सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारियों का कहना है कि जेल में निरुद्ध लॉरेंस बिश्नोई गोल्डी बराड़, काला जठेड़ी, रोहित गोदारा आदि के नाम का उगाही के लिए इस्तेमाल कर रहा था और इन्हें से वारदातें करवा रहा था। इसे देखते हुए ये गैंगस्टर लॉरेंस से अलग हुए हैं। अब ये अपने ही साम्राज्य चलाना चाहते हैं। एक कारण ये भी बताया जा रहा है कि गोल्डी बराड़ इस समय देश विरोधी काम करने वाले खालिस्तानियों से जुड़ गया है। गोल्डी बराड़ समेत कुछ गैंगस्टरों का नाम ड्रग्स मामले में सामने आ चुका है। इसको लेकर इनका व लॉरेंस का ममभुटाव हो गया। छोटे भाई अनमोल को लेकर भी लॉरेंस व गोल्डी के बीच तकरार पैदा हो गई थी। जेल में बंद 32 वर्षीय गैंगस्टर लॉरेंस ने 2010 में पंजाब यूनिवर्सिटी में छात्र रहते हुए अपराध की दुनिया में कदम रखा था। उसने यूनिवर्सिटी में छात्रसंघ चुनाव के दौरान एक प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार पर गोलीबारी की थी, जिसके लिए उसे तीन महीने जेल में बिताने पड़े थे। वह गैंगस्टर-आतंकवादी नेटवर्क गठजोड़ का हिस्सा है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार एक किसान का बेटा बिश्नोई पंजाब के फाजिल्का जिले का मूल निवासी है और उसने चंडीगढ़ से कानून की डिग्री हासिल की है।

चूर-चूर हो गया आईपीएस बनाने का सपना

लॉरेंस के पिता ने भी अपने बेटे को बड़ा आदमी बनाने का सपना देखा था। वह उसे आईपीएस बनाना चाहते थे, उन्होंने उसे वकालत भी कराई। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था, बेटा उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा और पिता की आंखों के सामने ही वो सपना चूर-चूर हो गया।

सलमान खान से क्या है दुश्मनी-

लॉरेंस एक दशक से भी ज्यादा समय से हिरासत में है। वह पिछले कई साल से जहां भी रहा है, वहां की जेलों से अपने आतंकवाद-अपराध सिंडिकेट का संचालन करता रहा है।

बिहार विधानसभा चुनाव 22 नवंबर से पहले,

सीईसी ने ईवीएम सहित कई नियमों में किए बड़े बदलाव

नई दिल्ली ।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने पटना में बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की तैयारियों की समीक्षा के बाद कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य को देश भर के लिए अनुकरणीय बताते हुए बिहार के 90,217 बूथ स्तरीय अधिकारियों को सराहना की।

चुनाव आयोग की मुख्य घोषणाएं

सीईसी ज्ञानेश कुमार ने बताया कि आयोग ने आगामी चुनावों के लिए कई बड़े बदलाव किए हैं, जो बिहार से शुरू होकर पूरे देश में लागू होंगे।

1. ईवीएम और मतपत्र में बदलाव- अब ईवीएम में उम्मीदवार की तस्वीर ब्लैक एंड व्हाइट के बजाय रंगीन होगी, ताकि

चुनाव चिह्न के अलावा पहचान करना आसान हो सके। इसके अलावा मतपत्र पर सीरियल नंबर का फॉन्ट अब बड़ा किया जाएगा।

2. मतदान केंद्र और सुरक्षा- आयोग ने फैसला किया है कि अब किसी भी मतदान केंद्र पर 1,200 से अधिक मतदाता नहीं होंगे। बिहार के हर मतदान केंद्र पर 100 प्रतिशत वेबकास्टिंग की सुविधा होगी। बूथ-स्तरीय अधिकारियों को बेहतर पहचान के लिए पहचान पत्र जारी किए गए हैं। साथ ही, मोबाइल फोन को बूथ के बाहर एक कमरे में जमा करने की प्रक्रिया पूरे बिहार में लागू की

- **मुख्य चुनाव आयुक्त बोले- बिहार में एसआईआर सफल**
- **अब इसे पूरे देश में कराएंगे, पोलिंग बूथों की 100फीसदी वेबकास्टिंग की जाएगी**

जाएगी।

3. मतगणना नियमों में बदलाव- ईवीएम की गिनती के अंतिम दो राउंड से पहले डाक मतपत्रों की गिनती अनिवार्य होगी। पहले, फॉर्म 17सी और ईवीएम काउंटिंग यूनिट के डेटा में अंतर होने पर सभी वीवीपैट की गिनती होती थी। अब इस नियम को और स्पष्ट किया गया है।

4. डेटा उपलब्धता- चुनाव समाप्त होने के कुछ दिनों के भीतर ही, पुरुष और महिला मतदाताओं की संख्या तथा मतदान के आंकड़े अब ईसीआई-नेट पर डिजिटल इंडेक्स कार्ड के रूप में उपलब्ध होंगे।

सीईसी ने लोगों को छट की बधाई दी

सीईसी ने बिहार के मतदाताओं से अपील करते हुए कहा, मैं बिहार के सभी मतदाताओं से अपील करता हूं कि वे लोकतंत्र के इस पर्व को उसी उत्साह के साथ मनाएं जैसे आप छठ मनाते हैं। सभी मतदान करें और अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने मतदाताओं को सफल मतदाता सूची शुद्धिकरण प्रक्रिया के लिए भी बधाई दी।

सोनम वांगचुक ने एनएसए हिरासत में रहते हुए, लद्दाख हिंसा में हुई मौतों की न्यायिक जांच मांगी

नई दिल्ली ।

जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक, जिन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत हिरासत में लिया गया है, ने लेह में विरोध प्रदर्शनों के दौरान मारे गए चार लोगों, जिनमें एक पूर्व सैनिक भी शामिल है, की स्वतंत्र न्यायिक जांच की मांग की है।

वांगचुक ने लद्दाख के लोगों से शांति और एकता बनाए रखने और महात्मा गांधी के बताए अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए अपना संघर्ष जारी रखने की अपील की है। यह संदेश उनके भाई त्सेरिंग दोरजे ले और वकील मुस्तफा हाजी के माध्यम से आया, जिन्होंने उनसे जोधपुर सेंट्रल जेल में मुलाकात की। अपने संदेश में, वांगचुक ने कहा है कि जब तक स्वतंत्र जांच का आदेश नहीं दिया जाता, वह जेल में रहने के लिए तैयार हैं। रेमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेता वांगचुक ने सर्वोच्च निकाय और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस की छठी अनुसूची और राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग का भी समर्थन किया है। उन्होंने कहा, लद्दाख के हित में शीर्ष निकाय जो भी कदम उठाएगा, मैं तहे दिल से उनके साथ हूं। वांगचुक ने यह भी कहा कि वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हैं। उन्होंने मारे गए लोगों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है और घायलों तथा गिरफ्तार किए गए लोगों के लिए प्रार्थना की है। लेह सर्वोच्च निकाय और केडीए देनों ने 6 अक्टूबर को होने वाली गृह मंत्रालय की बातचीत से खुद को अलग कर लिया है। उनकी मुख्य मांग है कि चार लोगों की हत्या की न्यायिक जांच हो और वांगचुक सहित सभी हिरासत में लिए गए लोगों को बिना शर्त रिहा किया जाए। सोमवार को सुप्रीम कोर्ट वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. अंगमो की याचिका पर सुनवाई करेगा, जिसमें उन्होंने एनएसए के तहत उनकी नजरबंदी को चुनौती दी है और उनकी रिहाई की मांग की है।

कफ सिरप कांड के बाद ताबड़तोड़ एक्शन, कटारिया फार्मा को किया गया सील

नई दिल्ली।

जबलपुर के नौदराबिज स्थित कटारिया फार्मा को सील किए जाने की कार्रवाई रविवार दोपहर को आरंभ हुई। जिला प्रशासन कि इस कार्रवाई में क्षेत्रीय ओमती थाना और औषधि विभाग से जुड़े अधिकारी भी शामिल थे। खबर लिखे जाने तक यह प्रक्रिया चल रही है। छिंदवाड़ा में कफ सिरप पीने से जिन बच्चों की मौत हुई है वह दवा यहीं से सप्लाई हुई थी गौरतलब है कि कटारिया फार्मा को ऐसे समय सील किया जा रहा है जबकि सोमवार को मुख्यमंत्री का नगर दौरा प्रस्तावित है। बताया जाता है कि औषधि निरीक्षक द्वारा कटारिया फार्मा का निरीक्षण कर कोल्ड्रिफ सीरप के सैंपल लेकर प्रयोगशाला भेजे गए हैं। निरीक्षण के दौरान कटारिया फार्मा पर उपलब्ध कोल्ड्रिफ के शेष स्टॉक की खरीदी बिक्री को तत्काल प्रभाव से बंद करवा दिया गया था। इसके साथ ही इस फर्म द्वारा जहां दवाई सप्लाई की गई थी उन फर्मों से भी इस दवाइयों के क्रय विक्रय को पूर्णतः प्रतिबंध करवा दिया गया था। सैंपल की रिपोर्ट के आधार पर आगामी विधिक कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है।महत्वपूर्ण है कि पूर्व में औषधि विभाग कटारिया फार्मा में रखें 50 यूनिट फ्रीज कर चुकी है और 16 को सैंपल के तौर पर परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भेजा गया है।

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में 7 जगह लैंडस्लाइड, 17 मौतें

कोलकाता ।

उत्तर बंगाल में लगातार भारी बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त है। दार्जिलिंग जिले में हुए भूस्खलन और पुल टूटने की घटनाओं में अब तक 14 लोगों की मौत हो गई है और दो लोग लापता बताए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, मिरिक और सुखिया क्षेत्रों में भूस्खलन के कारण कई लोग हताहत हुए हैं। इस हादसे के बाद दार्जिलिंग जिला पुलिस राहत और बचाव कार्य में जुटी हुई है। वहीं कालिम्पोंग में स्थिति अब भी गंभीर बनी हुई है। लगातार बारिश से कई इलाकों का संपर्क टूट गया है और सड़क यातायात बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

पीएम मोदी ने जनहानि पर जताया दुख

प्रधानमंत्री मोदी ने दार्जिलिंग में पुल ढहने की घटना पर दुख जताया है।

पीएम मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा- दार्जिलिंग में एक पुल दुर्घटना में हुई जान-माल की हानि से अत्यंत दुःखी हूं।

जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति संवेदना। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। भारी बारिश और भूस्खलन के मद्देनजर दार्जिलिंग और आसपास के इलाकों की स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है। हम प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

राष्ट्रपति ने भी हादसे पर जताया दुख

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस हादसे पर दुख जताया है। एक्स पर राष्ट्रपति भवन की तरफ से किए पोस्ट में

- **पुल टूटा, घर गिरे; मलबे में दबे लोग; सिक्किम से संपर्क कटा**
- **दार्जिलिंग में बारिश से तबाहीः राष्ट्रपति-पीएम ने जताया दुख**

लिखा गया- पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में भारी बारिश और भूस्खलन के कारण हुई दुखद जनहानि अत्यंत दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करती हूं। मैं बचाव एवं राहत कार्यों की सफलता की प्रार्थना और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।

लोहे का पुल ढहा, आवाजाही हुई बाधित

पश्चिम बंगाल में भारी बारिश के कारण दुधिया में लोहे के पुल का एक हिस्सा ढह जाने के बाद सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग एसएच-12 सड़क पर वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित कर दी गई है।

मिरिक-सुखियापोखरी रोड के पास भूस्खलन

सबसे बड़ा भूस्खलन मिरिक-सुखियापोखरी रोड के पास हुआ, जिसने कई घर बहा दिए और वाहनों की आवाजाही बाधित कर दी। इससे आसपास के कई छोटे गांवों से संपर्क टूट गया। दार्जिलिंग उप-निर्वाचक रिचर्ड लेप्चा ने कहा कि सात लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि अन्य के फंसे होने की आशंका है। लगातार बारिश के कारण राहत और बचाव कार्य प्रभावित हो रहा है। स्थानीय लोगों और स्वयंसेवकों की मदद से राहत अभियान चल रहा है। कई घर भी क्षतिग्रस्त हुए हैं।

मोहन भागवत बोले- हम सब सनातनी, अंग्रेजों ने हमें तोड़ा, पाकिस्तान को वापस लेने पर दिया जोर

सतना। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने अपने सतना प्रवास के दूसरे दिन रविवार को बाबा मेहर शाह दरबार को नव निर्मित बिल्डिंग का लोकार्पण किया और लोगों को संबोधित करते हुए एकता और भाषा के महत्व पर जोर दिया। डॉ. भागवत ने कहा कि बंटवारे के बाद सिंधी भाई पाकिस्तान नहीं गए बल्कि अविभाजित भारत आए, और इसे लेकर उन्हें खुशी है। उन्होंने कहा, 'जो हम घर का कमरा छोड़कर आए हैं, उसे कल वापस लेकर फिर से देश जोड़ना है।' भाषा विवाद पर बोलते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि 'भाषा अनेक है, भाव एक होता है। मूल भाषा से ही निकली है अनेक भाषाएं। सारी भाषाएं भारत की राष्ट्र भाषा है। प्रत्येक नागरिक को कम से कम तीन भाषाएं आनी चाहिए। घर, राज्य और राष्ट्र की भाषा।' सभा में उन्होंने आध्यात्मिक संदेश भी दिया और कहा कि काम की इच्छा की पूर्ति के लिए अपने धर्म को मत छोड़ो, अपना अहंकार छोड़ो और स्वयं को देखो। देश और समाज के कल्याण के लिए अपने स्व को समझना जरूरी है। इस अवसर पर दरबार प्रमुख पुरुषोत्तम दास जी महाराज, मध्यप्रदेश के डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला, राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, इंदौर सांसद शंकर लालवानी, भोपाल विधायक भगवान दास सबनानी, जबलपुर कैंट विधायक अशोक रोहानी और कई साधु-संत व गणमान्य लोग मौजूद रहे।

बरेली बवालः मौलाना तौकीर के करीबी नफीस के बरातघर पर दूसरे दिन भी चले बुलडोजर, भारी पुलिस बल तैनात

बरेली ।

बरेली विकास प्राधिकरण (बीडीए) ने जसौरा मोहल्ले में मौलाना तौकीर रजा खां के करीबी नफीस के बरातघर को पूरी तरह ध्वस्त करने के लिए कार्रवाई दूसरे दिन भी जारी रखी। बीडीए की टीम पुलिस बल के साथ रविवार सुबह करीब 10 बजे वहां पहुंची और दो बुलडोजरों से बरातघर पर कार्रवाई शुरू करवाई। पुलिस और प्रशासन के अधिकारी कर्मचारी मौके पर मौजूद हैं। भारी पुलिस बल को लगाया गया है। आसपास के लोग कार्रवाई पर खामोश हैं। कहीं से किसी भी तरह के विरोध की स्थिति नहीं है। बताया गया है कि शाम पांच बजे तक बरातघर को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया जाएगा। बीडीए के संयुक्त सचिव दीपक कुमार ने बताया कि रजा पैलेस नाम के इस बरातघर के लिए कोई मानचित्र स्वीकृत नहीं था। मकान के मानचित्र में ही बरातघर का संचालन किया जा रहा था। बरातघर मालिक को 2024 में नोटिस दिया गया था। नोटिस देने के बाद भी जब उन्होंने कोई नक्शा स्वीकृत नहीं कराया तो इसके बाद बीडीए ने कार्रवाई को आगे बढ़ाया। अब जब कार्रवाई हुई है तो मौके पर कोई मानचित्र या साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया जो इसकी वैधता को साबित करता हो। शहर में 26 सितंबर को हुए बवाल के बाद आरोपियों के खिलाफ बीडीए, नगर निगम और पुलिस प्रशासन कार्रवाई कर रहा है। शनिवार को मौलाना तौकीर रजा खां की पार्टी के महासचिव व प्रवक्ता नफीस के जसौरा स्थित बरातघर रजा पैलेस पर करीब छह घंटे तक बीडीए के चार बुलडोजर चलते रहे। बीडीए के मुताबिक रजा पैलेस का निर्माण अवैध तरीके से किया गया था।

अमित शाह ने की सीएम फडणवीस और उपमुख्यमंत्रियों से मुलाकात, किसानों के लिए राहत पैकेज पर हुई चर्चा

मुंबई ।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्रियों एकनाथ शिंदे व अजित पवार के साथ शिरडी में महत्वपूर्ण बैठक की। भाजपा सूत्रों के अनुसार यह बैठक शनिवार देर रात लगभग 45 मिनट तक चली। सूत्रों ने बताया कि बैठक में महाराष्ट्र के कई हिस्सों में हुई भारी बारिश से फसलों को हुए नुकसान और प्रभावित किसानों को तुरंत वित्तीय सहायता देने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया गया। नेताओं ने इस मुद्दे पर तत्काल राहत पैकेज की रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया।

विकास और प्रशासनिक मामलों की समीक्षा

इस बैठक में केवल कृषि संकट ही नहीं, बल्कि राज्य में चल रही विभिन्न विकास परियोजनाओं और प्रशासनिक मामलों की प्रगति की भी समीक्षा की गई। केंद्रीय और राज्य स्तर के नेताओं ने मिलकर आवश्यक कदमों और रणनीति पर चर्चा की।

शिरडी का चयन और बैठक की रूपरेखा

अमित शाह शनिवार रात अहिल्यानगर जिले के शिरडी पहुंचे। बैठक एक होटल में आयोजित की गई थी, जहां सभी नेता शामिल हुए। सूत्रों ने बताया कि हाल में हुई बेमौसम और अत्यधिक बारिश के

- **सूत्रों ने बताया कि बैठक में महाराष्ट्र के कई हिस्सों में हुई भारी बारिश से फसलों को हुए नुकसान और प्रभावित किसानों को तुरंत वित्तीय सहायता देने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया गया।**

कारण कई जिलों में फसलों को भारी नुकसान हुआ है, जिससे किसानों में सरकारी मदद की मांग बढ़ गई है। सूत्रों के अनुसार केंद्र और राज्य सरकार जल्द ही किसानों के लिए एक बड़ा राहत पैकेज घोषित कर सकती हैं। बैठक में सभी नेताओं ने प्रभावित क्षेत्रों में त्वरित सहायता और फसलों की क्षति की भरपाई सुनिश्चित करने पर भी चर्चा की।

राजद का मतलब है अपराध, नरसंहार और भ्रष्टाचार - नित्यानंद राय

पटना । केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने रविवार को पटना स्थित भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि 1990 से 2005 तक का राजद शासनकाल बिहार के इतिहास का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दौर था। उस 15 वर्षों की दुर्दशा के लिए लालू परिवार और राष्ट्रीय जनता दल सीधे तौर पर जिम्मेदार है। नित्यानंद राय ने कहा कि राष्ट्रीय जनता दल का मतलब है-अपराध, नरसंहार, अपहरण, गुंडाराज और जंगलराज। उन्होंने कहा कि पूरा बिहार जानता है कि 1990 से 2005 के बीच किस तरह से बिहार को लूट, हत्या, बलात्कार और अपहरण का अड्डा बना दिया गया था। उस दौर में रात ही नहीं, दिन में भी लोग घर से निकलने से डरते थे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राजद के शासनकाल में अपहरण एक उद्योग बन गया था, जिसके संचालक और संरक्षक लालू परिवार थे। सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि इस अवधि में 32,000 से ज्यादा अपहरण की घटनाएं दर्ज हुईं। उन्होंने तेजस्वी यादव से सवाल किया, क्या आप इस बात से इनकार कर सकते हैं कि मुख्यमंत्री आवास से अपहरण की डील नहीं होती थी? क्या यह सच नहीं कि अपहरणकर्ताओं को संरक्षण लालू परिवार से मिलता था और फिरौती के पैसे मुख्यमंत्री आवास तक पहुंचते थे? नित्यानंद राय ने कहा कि 1990 से 2005 के दौरान 18,136 हत्याओं को अंजाम दिया गया। उनमें से कई अपराधी आज

राजद में विधायक, जिला अध्यक्ष और पार्टी के प्रमुख पदों पर हैं। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव इन हत्यारों को जानते भी हैं और पहचानते भी हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार में नरसंहार राज के प्रणेता लालू यादव और राजद हैं। 15 साल के शासनकाल में 59 बड़े जातीय नरसंहार हुए, जिनमें 600 से ज्यादा लोगों की हत्या की गई। उन्होंने कहा कि लालू यादव ने न तो कभी इन घटनाओं पर संवेदना जताई और न ही पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाया। नित्यानंद राय ने चुनौती दी- अगर हिम्मत है तो तेजस्वी यादव स्वीकार करें कि आपकी सरकार के संरक्षण में नरसंहार होते रहे और सरकार मूकदर्शक बनी रही। बताइए कि इन मामलों में आपकी सरकार ने क्या कार्रवाई की? उन्होंने कहा कि राजद की शासन व्यवस्था का मतलब ही जंगलराज होता है। पटना के कारोबारियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि लालू यादव की बेटी की शादी से पहले और शादी के दिन, राजद के गुंडों ने दुकानों को दिनदहाड़े लूट लिया। शादी के बहाने दुकानदारों को तबाह कर दिया गया और लूटा गया सामान मुख्यमंत्री आवास तक पहुंचा। उन्होंने तेजस्वी यादव से सवाल किया-क्या पटना के उन कारोबारियों को अब तक मुआवजा मिलेगा जिनकी दुकानें लूट ली गई थीं? यह हाल केवल पटना का नहीं, बल्कि पूरे बिहार का था। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने आगे कहा कि राजद का शासनकाल भ्रष्टाचार की गंगोत्री था। लालू-राबड़ी के घर से ही भ्रष्टाचार की धारा बहती थी। उन्होंने कहा कि चारा घोटाला, दूध घोटाला, नौकरी के बदले जमीन घोटाला, अलकतरा घोटाला, आईआरसीटीसी होटल घोटाला और तेजस्वी यादव के नेतृत्व में 'चिड़ियाघर मिट्टी घोटाला'- यही राजद की असली पहचान है। नित्यानंद राय ने कहा कि 1990 से 2004 के बीच हुए विधानसभा और लोकसभा चुनावों में 700 से ज्यादा लोगों की हत्या हुई, जिनमें 50 से अधिक पुलिसकर्मी शामिल थे। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के नाम पर लूटतंत्र स्थापित करने का काम राजद ने किया और बिहार की जनता ने अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकाई। महिलाओं की सुरक्षा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 1990-2005 का दौर महिलाओं के लिए भयावह था।

उद्धव और राज ठाकरे आज फिर एक साथ, तीन महीनों में पांचवीं मुलाकात, सियासी हलचल बढ़ी

मुंबई । महाराष्ट्र की राजनीति में फिर से ठाकरे बंधुओं की नजदीकियां सुर्खियों में हैं।

लंबे समय से अलग रहीं पर चल रहे उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे रविवार (5 अक्टूबर) को एक पारिवारिक कार्यक्रम में साथ नजर आए. यह कार्यक्रम शिवसेना सांसद संजय राउत के पोते के नामकरण समारोह का था, जो मुंबई के बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) स्थित एमसीए क्लब में आयोजित किया गया था. इस समारोह में उद्धव ठाकरे अपने परिवार पत्नी रश्मि ठाकरे और बेटे आदित्य ठाकरे के साथ पहुंचे. वहीं, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे भी अपनी पत्नी शर्मिला ठाकरे के साथ मौजूद रहे. ठाकरे परिवार के दोनों भाइयों को एक ही मंच पर देखकर कार्यक्रम में मौजूद लोग हैरान रह गए, जबकि राजनीतिक गलियारों में इस मुलाकात को लेकर चर्चाओं का दौर तेज हो गया है. यह पहली बार नहीं है जब दोनों भाई हाल में आमने-सामने आए हैं. बीते तीन महीनों में यह उनकी पांचवीं मुलाकात है. सूत्रों के मुताबिक, दोनों दलों शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे गुट) और मनसे के बीच स्थानीय निकाय और नगर निगम चुनावों को लेकर संभावित गठबंधन की बातचीत चल रही है.